उरमूल रूरल हैल्थ रिसर्च एण्ड डवलपमेंट ट्रस्ट, बीकानेर

परियोजना रिपोर्ट

अप्रेल 2021 से मार्च 2022

उरमूल भवन, रोडवेज बस स्टेण्ड के पास, बीकानेर

फोन नम्बर : 0151–2523093, **website** : urmul.org

Email : urmultrust@rediffmail.com, mail@urmul.org

कार्यक्रम विवरण

क्र.स.	विषय	पेज नम्बर
1.	चाइल्ड हैल्प लाइन–1098 Child India Foundation	3-4
2.	गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं का सशक्तिकरण Save the Children Fund	5-6
3.	कशीदाकारी क्षमतावधर्न प्रशिक्षण कार्यक्रम Charities Aid Foundation % Accenture India	7-8
4.	राठी नस्ल सुधार परियोजना NDDB-RGM	9-10
5.	उषा सिलाई स्कूल कार्यक्रम USHA International	11
6.	पारम्परिक चारागाह मार्गो को पुर्नजीवित करना Food and Agriculture Organization(FAO)	12
7.	मरूगंधा परियोजना HDFC Bank-CSR	13-15
8.	ग्रामीण बच्चों के डिजिटल शिक्षा कार्यक्रम Malala Fund	16
9.	उरमूल प्राकृतिक रंगाई कलस्टर कार्यक्रम Indian Micro Enterprises Development Foundation(IMEDF)	17
10.	संशक्त कार्यक्रम International Initiative for Impact Evaluation (3ie)	18-19
11.	एग्रो–इको सिस्टम कार्यक्रम SELCO Foundation	20
12.	कोविड–19 राहत कार्यक्रम CAF-Charities Aid Foundation & Oracle	21
13.	कोविड–19 ऑक्सीजन कन्स्ट्रेटर वितरण कार्यक्रम PSMRI & Barefoot College International	22
14.	ग्राम सेवा परियाजना State Bank of infia Foundation	23-24

चाइल्ड हैल्प लाइन,1098

परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर जिला
वितीय सहयोग	चाइल्ड लाइन इण्डिया फाउण्डेशन
परियोजना प्रारम्भ	अगस्त 2011
सहयोगी संस्थाएं	उरमूल सेतु, लूणकरणसर, उरमूल सीमान्त,बज्जू, उरमूल ज्योति, नोखा
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 – मार्च 2022

परियोजना का संक्षिप्त परिचय : उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर द्वारा अगस्त 2011 से बीकानेर जिले के शहरी एवं ग्रामीण अंचलो में अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर चाइल्ड लाइन 1098 का संचालन किया जा रहा है। चाइल्ड लाइन की शुरूआत से ही बीकानेर के शहरी एवं दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में चाइल्ड लाइन का प्रचार प्रसार टीम के द्वारा नियमित व लगातार किया जा रहा है। चाइल्ड लाइन के प्रभावी कार्यो को देखते हुएं 16 जनवरी 2019 से बीकानेर रेलवे स्टेशन पर बाल सहायता केन्द्र–1098 का संचालन भी शुरू किया गया है।

मुख्य उद्देश्य : किसी भी पीडित बच्चे व जन समुदाय के द्वारा दी गई सूचना को प्राप्त कर कम से कम समय में बच्चें तक पहुंचना और सहायता करना, समस्याग्रस्त, असामाजिक गतिविधियो में लिप्त बच्चों का सहयोग एवं जरूरत मंद बच्चों की पहचान करना व इसकी सूचना समवर्गी विभागो को देकर समस्या का समाधान करवाना।

परियोजना प्रगति विवरण :

केस प्रकार	चाइल्ड लाइन	रेलवे हैल्प डेस्क	कुल
1. हस्तक्षेप/सहायता			
चिकित्सकीय सहायता	18	.	16
आश्रय	20	59	79
आवासीय बच्चों के परिवार से सम्पर्क	20	50	70
पुनर्वास	18	77	95
शोषण से रक्षा	242	16	258
मृत्यु सम्बधित	.	.	.
स्पॉनसरशिप	406	.	406
2. गुमशुदा बच्चो के मामले			**.**
लापता बच्चें	17	85	102
बच्चों के परिजनो द्वारा मांगी गई सहायता	21	.	21
3. भावनात्मक सहायता एवं मार्गदर्शन	275	01	276
कुल 1 से 3 तक	**1013**	**288**	**1301**
4. सूचना	.	.	.
सूचना व अन्य प्रकार की सेवाओं के लिए	412	500	912
चाइल्डलाइन के बारे में जानकारी	748	1777	2525
प्रशासनिक कॉल	118	40	158
कुल – 3 से 5 तक	**2291**	**2605**	**4896**

दर्ज मामलों का विवरण : माह **01 अप्रेल 2021 से मार्च 2022** तक चाल्इडलाइन में कुल 1301 मामले दर्ज हुएं है। इन में से 1162 मामलों का निस्तारण किया जा चुका है।अभी केवल 139 मामले शेष है।

गुमशुदा मामलों का विवरण : 01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022 तक चाइल्डलाइन ने बीकानेर बाल कल्याण समिति के माध्यम से 102 गुमशुदा बच्चों को आश्रय दिलवाया गया है। जिस में से 95 बच्चों को परिजनों से मिलवा कर अपने अपने घर भिजया दिया गया है, तथा अभी कुल 07 गुमशुदा बच्चे अस्थाई आश्रय स्थल किशोर गृह, बालिका गृह एवं शिशु ग्रह बीकानेर में है।

पुर्नवास विवरण : माह 01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022 तक स्थानीय किशोर गृह व बालिका गृह में आश्रय पाएं बालक–बालिकाओं का पुर्नवास चाइल्ड लाइन के सहयोग से करवाया गया जिसका विवरण निम्न प्रकार से है :

ब्लॉक/क्षेत्र	अस्थाई आश्रय		स्थाई आश्रय		**वर्तमान अस्थाई आश्रय** *01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022*		
बालक–बालिका को उनके अभिभावक के साथ घर भेजा गया जहा के निवासी थे।	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	कुल
	87	68	06	02	**03**	**04**	**07**

आउटरीच गतिविधियां :

माह, ***01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022*** तक कुल 721 आउटरीच गतिविधियो का संचालन किया गया जिसमें विद्यालय, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे एवं जिले के अन्य सार्वजनिक स्थल शामिल है जिसका विवरण इस प्रकार से है :

ब्लॉक/क्षेत्र	***01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022***	**कुल**
जिला बीकानेर/शहरी क्षेत्र	731	**731**

बैठक गतिविधियां :

संस्थान	***01 अप्रेल 2021 से 31 मार्च 2022***	
	साप्ताहिक	**मासिक**
कोलेब	72	24
बाल कल्याण समिति	36	24
किशोर आश्रय गृह	36	24
बालिका गृह	36	24
जिला बाल संरक्षण ईकाइ बैठक	00	12

विशेष : कोविड राहत के तहत 630 बच्चों को मास्क और 250 बच्चों को राशन सामग्री उपलब्ध करवाई गई। कोरोना के द्वौरान लॉकडाउन में भी चाइल्डलाइन 1098 सेवा लगातार बच्चों कि मदद के लिए खेली रही हो मुसिबत में फसें बच्चों को मदद एव कोविड की रोकथाम के लिए प्रसार–प्रसार लगातार जारी है।

गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से वंचित बालिकाओं का सशक्तिकरण

परियोजना का नाम	गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं का सशक्तिकरण
परियोजना का कार्यक्षेत्र	जोधपुर जिला
वितीय सहयोग	बाल रक्षा भारत
परियोजना प्रारम्भ	सितम्बर 2017
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–मार्च 2022

परियोजना परिचय : संस्था के द्वारा सितम्बर 2017 से गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से वंचित बालिकाओं का सशक्तिकरण परियोजना का संचालन जोधपुर जिले के 9 ब्लॉक मण्डोर, लूणी, बालेसर, शेरगढ, फलौदी, बाप ओसिया, भोपालगढ एवं बिलाडा में 09 कस्तूरबा गॉधी बालिका आवासीय विधालयों के व 36 स्पोक स्कुलों (ब्लॉक वार चयनित 4 – 4) के साथ कार्य किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य : कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विधालय व स्पोक स्कुलों में बालिकाओं के शैतिक व जीवन कौषल विकास करना एवं षिक्षा से वंचित बालिकाओं को उनकी उम्र के अनुसार कक्षा में प्रवेष का अधिकार दिलवाना।

परियोजना प्रगति विवरण : बेसलाईन सर्वे अपडेशन : 09 केजीबीवी व 08 *स्पोक स्कुलों* में नव प्रवेषित 566 बालिकाओं का बेसलाईनव*एण्डलाईन* सर्वे किया गया। इन में से 497 बालिकाओं का स्तर गणित व हिन्दी में कमजोर पाया गया था।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरूष बालक	महिला बालिका	कुल
1.	अभिभावक बैठकों का आयोजन	51	647	541	1188
2.	जिला स्तरीय संमीक्षा बैठक	12	108	239	347
3.	बेसल*ाईन व* एण्डलाईन सर्वे	17	00	566	566
4.	जिला निष्पादन समिति बैठकों में भागीदारी	09	148	83	231
5.	षिक्षिकाओं का ऑनलाईन विषयगत प्रषिक्षण	02	21	44	65
6.	कोविड19 बचाव हेतु बालिकाओंवअभिभावकों सेफोन पर संपर्क	17	344	590	934
7.	कोविड–19 में बालिकाओं मास्क व कोविड किट वितरण	17	270	390	660
8	व्हाटस्अप ग्रुप बनाकर बालिकाओं को षिक्षण करवाया	09	00	403	403
9	बालिकाओं को ऑनलाईन षिक्षण से जोडा गया	17	00	478	478
10	सामुदायिक पुस्तकालय संचालन	27	538	785	1323
11	मोबाईल पुस्तकालय संचालन	08	495	648	1143
	कुल	**186**	**2571**	**476?**	**7338**

अन्य गतिविधि :

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरूष बालक	महिला बालिका	कुल
1.	ओपन स्कूल की बालिकाओं को शिक्षण करवाना	09	00	199	199
2.	ऑनलाईन केरियर कॉउन्सलिग प्रशिक्षण	17	580	854	1434
3.	एलुमिनाई मीटींग का आयोजन	17	00	833	833
4.	स्पोक स्कूल में पुस्तकालय स्थापित करना	08	671	731	1402
5.	विघालय सुरक्षा कार्यषाला	17	597	907	1504
6.	मीना राजू मंच बैठक	34	352	572	924
7.	शैक्षणिक बालिका मेलो का आयोजन	09	870	1345	2215
8	कोविड किट वितरण	44	2356	2950	5306
9	षिक्षण किट वितरण	09	00	900	900
10	केजीबीवी व स्कुलों में वार्षिक उत्सवों में भागीदारी	17	758	1120	1878
11	टी एल एम व स्वच्छता किट वितरण	08	671	731	1402
	कुल	**189**	**6855**	**11142**	**17997**

विशेष :

- 27 सामुदायिक पुस्तकालय संचालन कर 1323 बालक बालिकाओं को शिक्षा से जोडे रखने का कार्य किया।
- नवाचार व ऑनलाईन शिक्षण में योगदान हेतु संयुक्त निदेशक शिक्षा व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जोधपुर द्वारा सम्मानित।
- नई शिक्षा निति को प्रभावी तरीके से लागु करने के लिये जिला स्तरीय गठित समिति में उरमूल ट्रस्ट को सदस्य बनाया गया है।
- विघालय सुरक्षा कार्यशाला :– जोधपुर के 17 के.जी.बी.वी में विघालय सुरक्षा के अन्तर्गत कोविड 19 के नियमों व उपायों को साझा करते हुए सुरक्षा बिन्दुओं को लेकर बातचीत करते हुए जानकारी के.जी.बी.वी शिक्षिकाओं के सहयोग से बालिकाओं को दी गई।
- विघालय सुरक्षा प्रशिक्षण में 1504 बालक बालिकाओं व शिक्षिकाओं ने भाग लिया।
- मीना राजू मंच बैठक :–9 के.जी.बी.वी व 08 स्पोक स्कुलों में मीना मंच के सदस्यों व सुगमकर्ता के सहयोग से मीना मंच की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के अन्तर्गत मीना मंच की कहानी ''आम का बटवारा'' सुनाकर चर्चा की गई ।
- बालिकाओं से भेदभाव व सामाजिक कुरूतियों को लेकर बातचीत करते हुए एक अभिनय तैयार करवाया गया। व कम उम्र में शादी होने से शारीरिक व मानसिक कुप्रभावो पर चर्चा करते हुए बाल–विवाह पर नाटक तैयार कर समझ पुख्ता की गई।

कशीदाकारी क्षमतावधर्न प्रशिक्षण कार्यक्रम

परियोजना का नाम	कशीदाकारी क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	ब्लॉक, कोलायत एवं बीकानेर, जिला–बीकानेर
वितीय सहयोग	Charities Aid Foundation & Accenture India
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2016
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 – मार्च 2022

परियोजना परिचय : ग्रामीण क्षेत्र के दस्ताकारों की क्षमतावर्धन के उददेश्य से उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर और कैफ के द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम का संचालन बीकानेर,जोधपुर एवं चूरू जिलों में किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य :

- 719 नए समुदाय के सदस्यों को कटाव, बीडवॉल, सिलाई, बंधेज एंव रंगाई के हस्तशिल्प कार्य से जोड़ना।
- 90 कारीगरों का उद्यम कौशल विकसित करना एंव बाजार व व्यापार की मुख्यधारा में एकीकृत करना।
- अधिक गतिशील और टिकाऊ विकास की दिशा में आजीविका की पहल के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आत्मयम्मान और वित्तीय स्वंत्रता की ओर ले जाना।
- कारीगरों के व्यापार में वृद्वि और शिल्प अर्थव्यवस्था से उद्यमियों को लैस करके, शहरी केन्द्रों की और बढते ग्रामीण प्रयास को नियत्रित करना और कौशल की कमी को रोकने के प्रयास करना।
- ग्रामीण शिल्प कौशल में लगे समुदायों के सामाजिक विकास में सुधार।
- अपने प्रयासो की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए इस परियोजना के तहत प्रशिक्षण सभी कारीगरों के लिए नियमित काम सुनिश्चित करने के लिए नये मार्केटिग चैनल विकसित करना।

परियोजना प्रगति विवरण :

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरूष	महिला	कुल
1.	बीडबॉल प्रशिक्षण	05	.	114	114
2.	ब्लॉक प्रिटिंग प्रशिक्षण	05	15	115	130
3.	मुक्का कशीदा प्रशिक्षण	06	.	129	129
4.	प्राकृतिक रंगाई प्रशिक्षण	04	32	63	95
5.	टाई–डाई प्रशिक्षण	11	.	241	241
6.	बुनाई प्रशिक्षण	04	21	38	59
7.	डिजिटल प्रशिक्षण	06	26	106	132
8.	प्रोड्क्ट डवलपमेन्ट प्रशिक्षण	05	09	93	102
9.	बिजनेश मैनेजमेन्ट प्रशिक्षण	08	40	265	305
10	वेबिनार	04	15	37	52
कुल			**158**	**1201**	**1359**

विशेष : बीकानेर जिले में पॉच गावों में क्राफ्ट सेन्टर निर्माण किया गया है। जिन पर महिला आर्टिजन सामुदायिक रूप से कार्य करती है। ताकि कारीगर आधुनिक युग की कार्य प्रणाली से परिचित होकर अपने कार्यो को बेहतरीन ढंग से कर पाएं।

कौशल विकास कार्यक्रम दिल्ली : कौशल विकास कार्यक्रम के शहरी महिलाओ के लिए उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थितियो के उत्थान के लिए दिल्ली सरकार के साथ मिलकर चलाया गया है परियोजना के तहत 5 केन्द्रो पर दीर्घकालिन स्थाई आजिविका मॉडल महिलाओ के विभिन प्रकार के कौशल प्रशिक्षण देना है इन सहेली समन्वय केन्द्र (Women Incubation Centre) पर तकनिकी, वित्तीय, विपणन और प्रबन्धन की सलाह भी प्रदान कि जाएगी। .

उद्देश्य :

- महिला समूहों के कौशल, प्रशिक्षण और व्यावसायिक परामर्श के माध्यम से स्थाई आजिविका और महिला सामूहिक अवसरों का सुजन करना।
- विभिन योजनाओं/सेवाओं के लिए महिलाओं और किशोरों के लिए सहायता डेस्क के रूप में एकल मच प्रदान करना।
- नए, बदलते, और आगामी रोजगार और उद्यमशीलता के संदर्भ में महिलाओं के रोजगार की सुविधा के लिए समर्थन प्रणाली का निर्माण।

परियोजना प्रगति विवरण :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागीविवरण beneficiaries		
			पुरूष	महिला	कुल
1.	जूम मीटिग	2	4	5	**9**
2.	उद्यमी वेबिनार	1		19	**19**
3.	सिलाई प्रशिक्षण	1		28	**28**
4.	दस्तकार बाजार में एक्सपोजर विजिट	1		10	**10**
5.	ऑफलाइन मीटिग	2	3	3	**6**
6.	रगमंच प्रशिक्षण	11	31		**31**
7.	एस.एस.के का विजिट	4		130	**130**
	कुल	**22**	**38**	**195**	**233**

विशेष :

- परियोजना कार्य शुरू के समय एस.एस.के केन्द्रों का विजिट कर भौगोलिक एव आर्टिजन के डेटा सकलन किया गया।
- महिलाओ से समूह के रूप में कार्य करने के लिए बैठक का आयोजन किया गया।
- 28 महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण दिया गया।
- थिएटर प्रशिक्षकों के साथ बाल गृह लाजपत नगर में थिएटर प्रशिक्षण किया गया।
- मोहन गार्डन एस.एस.के सेंन्टर की 10 महिलाओ का एक्सपोजर विजिट करवाया गया।

राठी नस्ल सुधार परियोजना,RGM

परियोजना का नाम	राठी नस्ल सुधार परियोजना
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर जिले का लूणकरणसर, बीकानेर ,श्रीडूंगरगढ ब्लॉक, छतरगढ़
वितीय सहयोग	राष्ट्रीय गोकुल मिशन एवं राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2019
सहयोगी संस्थाएं	राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड, जयपुर राजस्थान सहकारी डेयरी संघ, जयपुर एवं राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर
प्रतिवेदन अवधि	अप्रैल 2021– मार्च 2022

परियोजना परिचय : इस परियोजना के पूर्व में एन.डी.पी.–प्रथम परियोजना के तहत 2013 से 2019 तक राठी नस्ल सुधार परियोजना को संचालित किया गया। इसी परियोजना को आगे बढाते हुएं राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत राठी नस्ल सुधार परियोजना का संचालन अप्रेल 2019 से बीकानेर जिले में किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य :

- राठी नस्ल की गायों का संरक्षण एवं बढावा देना एवं कृत्रिम वीर्यदान के लिए पशुपालको व किसाानो को प्रोत्साहित करना।
- प्रति पशु दुग्ध उत्पादन की क्षमता को बढाना व उत्कृष्ट राठी नस्ल के सांडो का उत्पादन करना।
- उत्कृष्ट राठी नस्ल के सांडो को सीमन बैंक को उपलब्ध करवाना एवं पशुपालको को न्यूनतम राशि पर राठी नस्ल कृत्रिम गर्भाधान की सेवाएं उपलब्ध करवाना।

परियोजना प्रगति विवरण :

क.स.	गतिविधि	संख्या
1.	परियोजना में सम्मलित गांव	159
2.	परियोजना के तहत सर्वे किये गये गांव	25
3.	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र कार्यकर्ता	25
4.	कृत्रिम गर्भाधान स्थापित केन्द्र	25
6.	वर्तमान में कृत्रिम गर्भाधान किये जा रहे गांव	185
7.	अब तक किये गये कृत्रिम गर्भाधान	7724
8.	अब तक परियोजना के तहत शामिल पशु	4443
9.	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र कार्यकर्ता का मोबाईल इनाफ एप्प प्रशिक्षण	25
10.	दुध मापन हेतू स्मार्ट वेहिंग स्केल मशीन कार्यकर्ता का प्रशिक्षण	29
11.	बाझपन निवारण शिविरों का आयोजन	25
12.	बाझपन निवारण शिविरों से लाभान्वित पशु	470
13.	किसानो के साथ कार्यक्रम विस्तार प्रोग्राम	25
15.	किसानो के साथ विस्तार प्रोग्राम से लाभान्वित	650
16.	कॉफ रैली में शामिल होने वाले पशुओं की संख्या	450
17.	गांव स्तरीय समिति गठन	25
18.	दूध मापन किये जा रहे पशुओं की संख्या	713
19.	कुल दूध मापन	6486
20.	कुल दूध टेस्टिग	6485
21.	परियोजना प्रबन्धन समिति बैठक	01
22.	कृत्रिम गर्भाधान से प्राप्त पशुओं की संख्या	2494

कॉफ रियेरिंग सेन्टर :

उरमूल पी.एस.राठी एन.डी.पी.–प्रथम परियोजना के तहत इस परियोजना के पूर्व में 2013 से 2019 तक राठी नस्ल सुधार परियोजना को संचालित किया गया। इसी परियोजना को आगे बढाते हुएं राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत राठी नस्ल सुधार परियोजना के कॉफ रियेरिंग सेन्टर का संचालन अप्रेल 2019 से उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर के कैम्पस मे किया जा रहा है। कॉफ रियेरिंग सेन्टर मे पशुपालक से खरीदे गए कॉफ को रखा जा रहा है।

कॉफ रियेरिंग सेन्टर में परियोजना क्षेत्र के पशुपालको के द्वारा पाले गये बछडों को लिया जाता है। पशुपालकों से बछडों की खरीद के समय बछड़ो में होने वाली प्रमुख बीमारियो की जांच की जाती है। इस डिजीज टेस्टिग में मुख्य रूप से केरियोटाइपींग, ब्रूसोलीस, बी.वी.डी आइ.बी.आर.और टीबी.जेडी.शामिल होती है। डिजीज टेस्टिग के अलावा पेरेन्टेज टेस्टिग, डी–वॉर्मिंग और टीकाकरण इत्यादि। इस प्रकार की गई सभी जांचो में सफल हुएं बछड़ो को कॉफ रियेरिंग सेन्टर पर लाया जाता है। अभी वर्तमान समय मे 7 अच्छी गुणवता के राठी नस्ल के बछड़े लूणकरनसर कॉफ रियरिंग सेन्टर मे मौजूद है।

कॉफ रियेरिंग सेन्टर से अप्रैल 2021 से मार्च 2022 तक 7 उच्च गुणवता के बछड़े सीमन स्टेशन को वितरण किया जा चुके है। पशुपालक से लाने के बाद बछड़ो को सेन्टर पर 3 माह तक रखा जाता है और समय–समय पर इनकी स्वास्थ्य की जांच भी होती है।

सेन्टर पर लाएं गए बछड़ो को वितरण हेतु सूचना राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के माध्यम से विभिन्न सीमन सेन्टरों को भेजी जाती है और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के मार्फत तय किए गए सीमन सेन्टर को बछड़े वितरण जाते है ताकि बीमारी मुक्त और अच्छी गुणवता के सीमन का उत्पादन किया जा सके।

बुल्स वितरण का विवरण :

क्र.स.	स्थान का नाम	संख्या
1.	माहाराष्ट्र पशुधन विकास	3
2.	नारवा सीमन स्टेशन, जोधपुर	2
3.	पशुधन विभाग, मध्यप्रदेश	2
कुल		**7**

उषा सिलाई स्कूल कार्यक्रम

परियोजना का नाम	उषा सिलाई स्कूल कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, बांसवाडा, बाड़मेर एवं करौली जिले
वितीय सहयोग	उषा इन्टरनेशनल
परियोजना प्रारम्भ	मार्च 2012
सहयोगी संस्थाएं	उरमूल सेतु, उरमूल सीमान्त, सहज संस्थान, प्रयास संस्थान एवं एकट बोघग्राम
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 मार्च 2022

परियोजना परिचय :उषा सिलाई स्कूल परियोजना का संचालन मार्च 2012 से राजस्थान के 09 जिलो में उषा इन्टरनेशनल के वितीय सहयोग से किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य : दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण देकर गांव स्तर पर सिलाई स्कूलों का संचालन करना एवं महिलाओं को आजीविका से जोडकर आर्थिक रूप सशक्तिकरण करना है।

परियोजना प्रगति विवरण : क्लासिकल एवं सेटेलाईट सिलाई स्कूलो का संचालन किया जा रहा है जिसका विवरण इस प्रकार से है :

क्र.स.	विवरण	क्लासिकल सिलाईस्कूल	सेटेलाईट सिलाईस्कूल	कूल सिलाई स्कूल
1.	कोलायत, बीकानेर	28	42	70
2.	श्रीडूंगरगढ, बीकानेर	06	34	40
3.	लूणकरणसर, बीकानेर	04	16	20
4.	बीकानेर	16	47	63
5.	पोकरण, जैसलमेर	20	81	101
6.	श्रीगंगानगर	15	79	94
7.	हनुमानगढ	20	92	112
8.	नागौर	10	38	48
9.	बासवाडा	10	32	42
10.	जोधपुर	32	91	123
11.	करौली	12	30	42
12.	बाडमेर	20	96	116
	कुल	**193**	**678**	**871**

संचालित स्कूलों एवं पंजीकृत व प्रशिक्षण प्राप्तिका विवरण :

क्र स	विवरण	क्लासिकल स्कूल	सेटेलाईट स्कूल	कुल
1.	संचालित केन्द्र व मशीन उपलब्धता	193	678	871
2.	कूल पजीकृत महिलाएं एवं बालिकाएं	**982**	**11776**	12758
3.	प्रशिक्षण पूर्ण कर चुकी महिलाएं एवं बालिकाएं	**728**	**7095**	7823

स्कूल संचालिकाओं की आमदनी का विवरण :

क्र स	विवरण	क्लासिकलस्कूल	सेटेलाईटस्कूल	कुल
1.	प्रशिक्षण फीस से केन्द्र संचालिकाओं की आय	85,200	10,86,310	11,71,510
2.	कपड़े सिलाई से केन्द्र संचालिकाओं की आय	23,19,000	2,14,12,380	2,37,31,380
3.	मशीन रिपेयरिंग से आय	30,400	2,24,380	2,54,780
	कूल राषि	**24,34,600**	**2,27,23,070**	**2,51,57,670**

नोट : वर्ष 2021–22 में 10 नये क्लासिकल सिलाई स्कूल और 20 सेटेलाईट स्कूल खोले गये 20 टीचर्स को लाइफ स्कील प्रशिक्षण दिया गया।

पारंपरिक चरागाह मार्गो को पुनर्जीवित करना

परियोजना का नाम	पारंपरिक चरागाह मार्गो को पुनर्जीवित करना
परियोजना का कार्यक्षेत्र	ब्लॉक, लूणकरणसर, बीकानेर
वितीय सहयोग	खाद्य एवं कृषि संगठन-FAO
परियोजना प्रारम्भ	जनवरी 2020
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 – मार्च 2022
परियोजना पूर्ण दिनांक	30 सितम्बर 2021

परियोजना परिचय : इस परियोजना का संचालन संयुक्त राष्ट्र खादय एवं कृषि संगठन के सहयोग से किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में पशुओं का समय पर टीकाकरण एवं पशु प्रबन्धन किस प्रकार से करे, जिससे छोटे पशुपालको की आर्थिक हानि को कम कर आय मे वृद्वि की जा सके। इस कार्यक्रम का मुख्य उददेश्य क्षेत्र के पशुपालको के लिए लाभप्रद रूप में इसे स्थापित करना है ताकि क्षेत्र के लोग इस कार्यक्रम को आर्थिक विकास के रूप में स्थापित कर पाये।

मुख्य उद्देश्य : मुख्य रूप से चराई के परम्परागता मार्गो को पुर्नजीवित करना तथा चरागाह विकास कर पलायन करने वाले पशुपालको को सुविधा प्रदान करना एवं पशुपालक को आजीविका के साथ जोडते हुएं आर्थिक संसाधन के रूप में परिवर्तीत करने का प्रयास है।

परियोजना प्रगति विवरण : सर्वेक्षण :

क.स.	जिले का नाम	ब्लॉक का नाम	सर्वेकृत गांवो की संख्या	सर्वेकृत पशुपालको की संख्या	सर्वेकृत पशुओं की संख्या
1.	बीकानेर	लूनकरणसर	36	556	40360

गतिविधी आयोजन विवरण :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरूष	महिला	कुल
1.	पशुपालकों के साथ गांव स्तरीय बैठक आयोजन	21	726	143	869
2.	पशु प्रबन्धन प्रशिक्षण आयोजन	08	318	.	318
3.	पशु स्वास्थ्य व टीकाकरण शिविर आयोजन	04	30	06	36
कुल		**33**	**1074**	**149**	**1223**

पशु स्वास्थ्य व टीकाकरण शिविर आयोजन :

क.स.	स्थान	लाभान्वित विवरण	
		पशुपालक	पशु–भेड व बकरी
1.	कालू, ढाणी भोपालाराम, रावासर एवं नकोदेसर सहित 04 स्थानो पर शिविर आयोजन	148	14143
कुल		**148**	**14143**

विशेष :–

क.स.	गतिविधि का विवरण	संख्या
1.	फैसिंग कार्य, केला, कालू एवं ढ़ाणी भोपालाराम	390 बीघा
2.	नर्सरी पौधे तैयार कि गई	6000
3.	पौधा रोपण, कालू, केला, राजासर भाटियान एव ढ़ाणी भोपालाराम	130 बीघा में 9000 पौधे
4.	जल कुण्ड निमार्ण	06
5.	कोविड–19 राहत सामग्री राशन किट वितरण	203
6.	हाईड्रोपोनिक यूनिट	14 यूनिट

विशेष :

1. कोविड के द्वौरान 20 पशुपालको को हैल्थ किट वितरण कि गई।
2. 05 हाईड्रसेपोनिक यूनिट केला एव 09 कालू में सी.एफ.सी में स्थापित कि गई।

मरूगंधा परियोजना

परियोजना का नाम	एच.आर.डी.पी परिवर्तन मरूगंधा परियोजना
परियोजना का कार्यक्षेत्र	ब्लॉक, पोकरण,उपखण्ड की 5 ग्राम पंचायत के 14 गॉव जैसलमेर जिला
वितीय सहयोग	एच.डी.एफ.सी बैंक, मुम्बई
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल–2019
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 – मार्च 2022

परियोजना परिचय : इस परियोजना का संचालन एच.डी.एफ.सी.बैंक के सी.एस.आर. के सहयोग से अप्रेल 2019 में जैसलमेर जिले के पोकरण ब्लॉक में किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य : थार रेगिस्तान के ग्रामीणों की आवश्यकताओं का प्राथमिकीकरण करते हुए उनका स्थाई आजीविका संवर्धन के माध्यम से समावेशी विकास करना तथा क्षेत्र की चुनौतियों का स्थाई रूप से समाधान करना!

परियोजना प्रगति विवरण : विशेष उपलब्धियाँ :

- कैमल कलस्टर अंतर्गत 20 गांवों के 240 ऊँट पालकों के फैडरेशन का विधिवत पंजीयन सहकारिता विभाग राजस्थान सरकार से पंजीयन करवाया गया।
- पोकरण में कैमल डेयरी का संचालन प्रारम्भ हो गया है तथा वर्तमान में प्रतिदिन 100 लीटर दूध जोधपुर, जैसलमेर, फलौदी, पोकरण व नागौर में बिक्री हेतु जा रहा है।
- ऊँटनी के दूध से उत्पाद जैसे साबुन, सर्फ, आईसक्रीम, बिस्कीट आदि बनाकर बाजार मे बिक्री होने लगी है।
- परियोजना की गतिविधियों के क्रियान्वयन में सम्बन्धित सरकारी विभागों का सहयोग व मार्गदर्शन मिल रहा है।
- क्राफ्ट में महिलाएं उत्पादन तैयार कर रही है एवं स्वयं अपने उत्पादों की बिक्री के लिए महानगरों में करने लगी है।
- स्वयं सहायता समुह के द्वारा किये गये कार्यो से उनमें आजीविका के लिए नवाचार करने की प्रवृति विकसित हुई है। समूह सदस्यों को रोजगार से जोड़ने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण दिये गये।
- किशोरी बालिकाओं में खेलों के माध्यम से उत्साह, उमंग नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ। उनमें बाहर जाने की झिझक कम हुई है।

आजीविका गतिविधी :

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण	
			ऊंट पालक	कुल
1.	ऊँट पालकों को जोड़ने हेतु बैठकें व सम्पर्क	30	235	235
2.	दुग्ध संग्रहण, मूल्य श्रृंखला, गुणवत्ता एवं स्वच्छता प्रशिक्षण	13	240	240
3.	ऊंटनी के दूध हेतु केन्द्र विकसित करना	01	240	240
4.	पशुपालकों का कौशल विकास प्रशिक्षण	12	138	138
5.	पशु स्वास्थ्य व टीकाकरण शिविर	09	1196	1196
6.	समुदायिक सामान्य स्वास्थ्य जॉच शिविर	12	890	890
7.	बायो गैस व वेस्ट कम्पोजिट यूनिट स्थापना	.–	10	10

आर्ट एवं क्राफ्ट कार्यक्रम :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम संख्या	सम्भागी विवरण	
			प्रशिक्षण अवधि दिवस	लाभार्थी संख्या
1.	कट वर्क एवं राली प्रशिक्षण आयोजन	05	05	110
2.	बुनाई प्रशिक्षण आयोजन	02	10	20
3.	गांव स्तरीय क्राफ्ट सेन्टर निर्माण	05	—.	140
4.	एक दिवसीय क्राफ्ट मेला	01	01	95
5.	भम्रण	01	02	21

सामुदायिक पर्यटन को बढावा देने हेतु मार्केट लिकेंज : परियेाजना के अन्तर्गत विकसित सामुदायिक पर्यटन को बढावा देने, बाजार से जुडाव व प्रचार–प्रसार के लिए जैसलमेर जिला स्तर पर विभिन्न होटल व्यावसायियों, मरू महोत्सव, पोरकण 2020 में भागीदारी की गई। इसके अलावा टूरिज्म कार्यक्रम की वैब साईड, ब्रौसर, प्रचार–प्रसार सामग्री निर्माण एवं नियमावली, इत्यादि तैयार किये गये ताकि टूरिज्म के कार्य को बेहतरीन ढंग से संचालित किया जाकर स्थानीय लोगो की आजीविका में वृद्वि करने के साथ ही उन्हे आर्थिक सशक्तिकरण दिशा में आगे बढाया जा सके।

इको टूरिज्म कार्यक्रम :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण	
			लाभार्थी	कुल
1.	परिवारों का प्रशिक्षण	02	20	20
2.	इको टूरिज्म हेतु परिवारों को बुनियादी ढांचा विकसित करने हेतु सहयोग	10	50	50
3.	उच्च स्तरीय आतिथ्य सत्कार, गुणवत्ता व मानक प्रशिक्षण आयोजन	02	18	18
4.	गाँव के लोक कलाकारों का समूह निर्माण व प्रशिक्षण	01	25	25

शिक्षा कार्यक्रम :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम संख्या	सम्भागी विवरण	
			लाभार्थी	कुल
1.	अभिभावक आमुखीकरण व अनियमित बच्चों का चिन्हिकरण	14	285	285
2.	विद्यालयों से वचिंत बच्चों हेतु जम्प टू पी.सी का संचालन	10	540	540
3.	विद्यालय प्रबंधन समिति का क्षमतावर्द्धन	12	175	175
4.	बालिका समूहों का सशक्तिकरण	35	573	573
5.	सरकारी विदयालय को मॉडल विद्यालय के रूप में विकासित करना	02	1250	1250
6.	विद्यालयों में बालिकाओं के लिए सेनेटरी कॉम्प्लेक्स निर्माण	02	650	650
7.	बालिकाओं के लिए खेल सामग्री वितरण	14	893	893
8.	सूचना प्रोद्योगिकी केन्द्र का निर्माण	02	1250	1250
9.	ज्ञानवर्द्धन पुस्तकों का वितरण : **1130 पुस्तक वितरण**	05	720	720
10.	विद्यालयों में शौचालय निर्माण / मरम्मत : **2 स्कूल**	02	1250	1250
11.	मॉडल आंगनवाडी केन्द्रों का निर्माण	05	200	200

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन कार्यक्रम :

क्र. स.	गतिविधी	सख्या	लाभार्थी परिवार	लाभार्थी सदस्य
1.	जल कुण्ड निर्माण	45	45	290
2.	जल कुण्ड मरम्मत	28	28	160
3.	सामुदायिक जल स्रौतों की खुदाई	01	35	35
4.	स्कूलों में जल कुण्ड मरम्मत	03	—	1550
5.	ठोस एवं तरल कचरा प्रबन्धन क्षमतावर्धन	04	—	265
6.	किचन गार्डनिक विकास	07	140	140
7.	बीज वितरण	100	100	500

स्वयं सहायता समूहों का गठन एवं मासिक बैठक :

क्र.स.	गठित स्वयं सहायता समूह	सदस्य	बैठकों की संख्या
1	14	219	42

अन्य गतिविधियाँ

- कैमल फैडररेशन के द्वारा कैमल मिल्क डेयरी का संचालन शुरू किया गया।
- फैडररेशन का पंजीयन सहकारिता विभाग राजस्थान सरकार से करवाया गया 240 ऊटपालक सदस्य बनाये गये।
- प्रतिदिन 200 लीटर कैमल मिल्क की मार्केटिग कि जा रही है और चीज भी बनाई जा रही है।
- जिला प्रशासन द्वारा परियोजना के तहत बने प्रोडक्ट का अवलोकन किया जाता है।
- कोरोना महामारी से अत्यधिक प्रभावित 121 परिवारों को खाद्य सामग्री के राशट किट वितरित किये गये।
- कोरोना महामारी समय कार्मिकों द्वारा ग्रामीणों को इस महामारी से बचाव के तरीकों की जानकारी दी। परियोजना की 6 ग्राम पंचायतो के 14 गांवो मे ग्रामीण क्षैत्रो में कपडे के मास्क बनाकर ग्रामीणों व सरकारी विभागों, प्रवासियों व गति गरीब परिवारों को निशुल्क वितरित किये। इसके अलावा सरकार व जनप्रतिनिधियों से पैरवी करके राशन सामग्री के किट, मेडिकल सहयोग, जागरूकता, कोरोना बचाव के उपाय आदि कार्य किये गये।
- ब्लॉक व जिला स्तरीय सरकारी अधिकारियों के साथ बैठकें। धर्मगुरूओं, मुखियाओं, जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क व चर्चा।
- बीज बैक स्थापित किया गया जिसमें समय पर फाल के लिए उचित दाम पर बीज और खाद् किसानो को उपलब्ध करा सके।
- क्राफट सेन्टर पर उत्पादन निर्माण प्रशिक्षण एवं कलेक्शन सेम्पलिंग कार्याशाला का आयोजन किया गया जिसमें 51 आर्टिजन महिलाओं और पुरूषों ने भाग लिया।
- परियोजना कार्यक्षेत्र की पचायतो के 14 गांवो में बैठक आयोजित कर कचरा मुक्त पंचायत बनाने का कार्य किया गया।
- 8 मार्च 2022 को अन्तरर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया परियोजना कार्यक्षेत्र की पचायतो के 14 गांवो से 426 महिलाओं ने भाग लिया।

ग्रामीण बच्चों के लिए डिजिटल शिक्षा कार्यक्रम

परियोजना का नाम	ग्रामीण बच्चों के लिए डिजिटल शिक्षा कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर, जोधपुर, नागौर एवं जैसलमेर
वितीय सहयोग	मलाला फण्ड - Malala Fund
स्हयोगी संस्थाएं	डेजर्ट रिर्सोस सेन्टर, उरमूल सेतु ,लूणकरणसर एवं उरमूल सीमान्त, बज्जू
परियोजना प्रारम्भ	सितम्बर 2020
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021 – मार्च 2022

परियोजना परिचय : कोविड–19 की परिस्थितयों में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा, विशेष कर बालिकाओं की शिक्षा को लेकर उभरी स्थितियों को मध्यनजर रखते हुएं इस परियोजना का संचालन सितम्बर 2020 किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य : कोविड–19 की स्थितियों में ग्रामीण क्षेत्र के 6000 बच्चों की शिक्षा को डिजिटल माध्यमों के द्वारा निरन्तर जारी रखने, उनके शैक्षणिक स्तर में उन्नयन एवं शिक्षा से वंचित/ड्रापआऊट 500 बालिकाओं के लिए निरन्तर शिक्षा को जारी रखते हुएं डिजिटल माध्यम से शिक्षा व्यवस्था के साथ प्रभावी जुडाव बनाना।

परियोजना प्रगति विवरण : इस परियोजना को सुचारू रूप से चलाने के लिए एवं गुणवता पूर्ण पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए उरमूल कैम्पस बज्जू में स्टूडियों का निर्माण करवाया गया, जॅहा डिजिटल पाठ्यसामग्री के लिए बीडियों रिकॉर्डिग का काम हो रहा है। साथ ही इन डिज्टिल पाठ्यसामग्री को बच्चों तक पहुचाने के लिए डिजिटल प्लेटफार्म बनाया गया, जिसमें बच्चों की जानकारी और उनके लिए विशेष आई.डी बनाने का कार्य हो रहा है।

कार्याशाला : बच्चों को शिक्षण सामग्री के अलावा अन्य जानकारी देने हेतु जैसे, बाल अधिकार, बाल सुरक्षा, चाइल्डलाइन, पौक्सो, कोमल मूवी के द्वारा गुड टच बैड टच, बालश्रम निषेध दिवस, बाल विवाह आदि के लिए 07 ऑनलाइन सेशन का आयोजित किया गया जिसमें बीकानेर, जैसजमेर एवं जोधपुर की बालिकाओं ने भाग लिया।

गतिविधि आयोजन :

क्र.स.	गतिविधि का नाम	सम्भागी		
		बालक	बालिका	कुल
1.	ओपन स्कूल परीक्षा से जोड़ी गई बालिकाओं का नामांकन	00	962	962
2.	डिजिटल शिक्षा हेतु बालिकाओं का चयन	2000	5000	7000
3.	ओपन स्कूल परीक्षा से जोड़ी गई बालिकाओं का समूह	00	962	962
4.	बालिकाओं के साथ कलस्टर स्तरीय गतिविधियों का आयोजन	00	186	186
5.	बाला सैनेट्ररी वितरण एवं महामारी प्रबन्धन कार्याशाला संख्या	00	250	250
6.	समशिक्षा परियोजना के कार्यकर्ताओं के साथ ऑनलाइन प्रशिक्षण	20	18	38
7.	समशिक्षा परियोजना के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक संख्या	24	20	44
8.	बाल अधिकार, बाल सुरक्षा खेल के महत्व, गृड टच बैड टच के बारे में बालिकाओं के साथ ऑनलाइन सेशन	00	52	52
अन्य गतिविधि				
1.	डिजिटल शिक्षण सामग्री की विडियों रिर्कोडिग संख्या	25		
2.	किशोरी बालिकाओं के साथ वर्चुअल सत्र	470		
3.	ऑनलाइन शिक्षण हेतु विडियों निर्माण	210		
4.	बाल अधिकार और बाल संरक्षण से संबधित विडियों निर्माण	20		
5.	बच्चों की कांउसलिग के सत्र विडियों निर्माण	137		
6.	समशिक्षा परियोजना के कार्यकर्ताओं के साथ ऑनलाइन बैठक	12		

उरमूल प्राकृतिक रंगाई कलस्टर कार्यक्रम–स्फूर्ति

परियोजना का नाम	उरमूल प्राकृतिक रंगाई कलस्टर कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर जिला
वितीय सहयोग	इंडियन माइक्रो एंटरप्राइजेज डवलपमेंट फाउन्डेशन.IMEDF
स्हयोगी संस्थाएं	डेजर्ट रिर्सोस सेन्टर एवं उरमूल सिमान्त, बज्जू
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2020
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–मार्च 2022

परियोजना परिचय : भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उधोग मंत्रालय के सहयोग से परियोजना संचालित की जा रही है। इस कार्यक्रम में उरमूल ट्रस्ट क्रियान्वयन कार्यकारी एजेन्सी, उरमूल सीमान्त एस.पी.वी. एजेन्सी एवं डेजर्ट रिर्सोस सेन्टर तकनिकी एजेन्सी के रूप में कार्य कर रही है। इस कार्यक्रम मे पारम्परिक ढंग से काम रहे उधोगो के साथ 650 पारम्परिक दस्ताकारों को जोडा जायेगा। कार्यक्रम के तहत उरमूल कैम्पस ,बज्जू में एक भवन का निर्माण भी किया जायेगा।जिसमें प्राकृतिक रंगाई का कार्य किया जायेगा।

मुख्य उद्देश्य : पारम्परिक तरीकों से काम कर रहे उधोगों एवं दस्तकारों को फिर से पारम्परिक कला से जोडकर उनका कौशल विकास करना तथा उनके कौशल को रोजगारमुखी बनाने की प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करते हुएं स्व–रोजगार की दिशा में आगे बढाना ताकि पारम्परिक कला को जीवित रखने के साथ ही दस्तकारों को आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जा सके।इसके साथ ही दस्तकारों को बाजार व्यवस्था में मॉग के अनुसार नई कला एवं डिजाईन के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना व मार्गदर्शन एव सहयोग करना।

परियोजना प्रगति विवरणः गतिविधि आयोजन

क्र.स.	गतिविधि का नाम	कार्यक्रम आयोजन	सम्भागी		
			आर्टिजन	पुरूष	कुल
1.	महिला दस्तकारों का डाटा ऑनलाइन करना	01	650	00	650
2.	उधमिता प्रशिक्षण का आयोजन	01	39	00	39
3.	सपोर्ट फ्रट का प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जैसे : ऐप्लिक, कशीदा, मुक्का कशीदा, सिलाई एवं नये उत्पाद तैयार करना	26	572	00	572

विशेष :

- डिजिटल प्रशिक्षण हाल का निर्माण कार्य किया गया है। जिसमें कुछ विशेष प्रकार की नई तकनिकी का इस्तेमाल किया गया है। जैसे : प्राकृतिक वातानुकूलित बनाया गया है, दिवारो को एग्रोबोर्ड और बिच में भेड़ एव ऊट की ऊॅन का उपयोग किया गया है।
- उरमूल प्राकृतिक रंगाई कलस्टर का निर्माण उरमूल कैम्पस, बज्जू में 95 प्रतिशत किया जा चुका है। फिन्सिग एवं लकडी का कार्य प्रगति पर है। कलस्टर का निर्माण भूगोलिक परिस्थितियो को घ्यान में रखते हुए किया गया है। जिसमें अलग अलग तकनिकी का इस्तेमाल किया गया है। जैसे :– फ्लाई ऐशबिरिक का ही अधिकाश उपयोग किया गया है, हवा और धूप के लिए सुचारू रूप से खिड़की एवं रोशनदान और दरवाजों का निर्माण किया गया है। रोहतक डॉम तकनिकी से बनाई गई है।
- उरमूल प्राकुतिक रंगाई कलस्टर पर निम्न मशीन उपलब्ध करवाई गई है। जैसे सिलाई मशीन, कटाई मशीन, काज मशीन, हाई क्वालिटी प्रेस (इस्त्री), दाग धब्बा हटाने की मशीन (स्टेन रिमूवर), लकड़ी का हैडलूम, चरखा, अलग अलग स्टेज पर कपड़े की जॉच करने की मशीन, सामान स्टोरज आदि।

सशक्त कार्यक्रम

परियोजना का नाम	सशक्त कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर, जोधपूर, जैसलमेर ,नागौर, श्रीगंगानगर एव अलवर
वितीय सहयोग	International Initiative for Impact Evaluation (3ie)
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2021
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–मार्च 2022

परियोजना परिचय : ग्रामीण क्षेत्र के दस्ताकारों की क्षमतावर्धन के उददेश्य से उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर और 3 आई.ई. के द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम का संचालन बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर, नागौर, श्रीगंगानगर एवं अलवर जिलों में किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य :

1. क्राफ्ट के पुराने कलस्टरो का असेसमेट कर वित्तिय , तकनिकी, मार्केटिग सर्पोट एव कारीगरो का क्षमतावर्धन कर हस्तशिल्प कार्य से जोड़ना।
2. क्राफ्ट के नये कलस्टरो का चयन कर क्राफ्ट हब बनाना।
3. कारीगरों का उद्यम कौशल विकसित करना एंव बाजार से व्यापार की मुख्यधारा में एकीकृत करना।
4. अधिक गतिशील और टिकाऊ विकास की दिशा में आजीविका की पहल के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आत्मसम्मान और वित्तीय स्वंत्रता की ओर ले जाना।
5. कारीगरों के व्यापार में वृद्वि और शिल्प अर्थव्यवस्था से उद्यमियों को लैस करके, शहरी केन्द्रों की और बढते ग्रामीण प्रयास को नियत्रित करना और कौशल की कमी को रोकने के प्रयास करना।
6. ग्रामीण शिल्प कौशल में लगे समुदायों के सामाजिक विकास में सुधार।
7. अपने प्रयासो की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए इस परियोजना के तहत प्रशिक्षण सभी कारीगरों के लिए नियमित काम सुनिश्चित करने के लिए नये मार्केटिग चैनल विकसित करना।
8. देसी वुल के कलस्टर विकसित कर क्राफ्ट हब बनाना।
9. नये कलस्टरो मे डिजाईन एव क्राफ्ट की गुणवता के प्रोत्ससाहन करना।
10. डिजिटल प्लेटफार्म तैयार करना।
11. 4000 हजार अर्टिजनो को आत्मनिर्भर बनाने के साथ स्वतत्र, नियमित आजिविका से जोड़ना।

परियोजना प्रगति विवरण :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरुष	महिला	कुल
1.	स्टॉफ का क्षमतावर्धन प्रशिक्षण	01	20	13	33
2.	बैसलाईन	00	23	200	223
3.	कशीदाकारी प्रशिक्षण	12	00	306	306
4.	विविग प्रशिक्षण	04	53	20	73
5.	क्वालिटी जॉच प्रशिक्षण	01	10	03	13
6.	बैगलोर ऐक्सपोजर विजिट	01	01	05	06
7.	सिलाई प्रशिक्षण	08	00	175	175
8.	ऐपलिक प्रशिक्षण	04	00	98	98
9.	मुक्का प्रशिक्षध	04	00	100	100
10.	ईन्टरप्राईजेज एवं वित्तिय प्रबन्धन	03	00	67	67
11.	मार्केटिग और मारचैन्डाईजिंग	01	11	10	21
	कुल	41	118	997	1115

अन्य विशेष :–

- सरकारी योजनाओं जोडने के लाभार्थियो के चयन का कार्य किया गया।
- वसुधरा और सीमान्त संस्था का वल्यु चैन विश्लेष्ण का कार्य किया किया।
- 350 आर्टिजनो को सरकारी योजनाओं से जोडने का कार्य किया गया।
- 5 प्रशिक्षण मॉडूल तैयार करना ।
- परियोजना टीम द्वारा नियमित आर्टिजनो से सम्पर्क कार्य किया गया।
- बेसलाईन फॉर्मेट तैयार किया गया।
- 853 आर्टिजनो का असेसमेंट किया गया।
- 6 आर्टिजनो का ऐक्सपोजर विजिट करवया गया। तथा बैगलोर प्रदर्शनी मे भाग लिया।
- ऐपलिक ,कशीदाकारी, क्वालिटी जॉच एवं विविग प्रशिक्षणो के मॉडूल तैयार किये गये। ।
- 95 आर्टिजनो के आर्टिजन कार्ड बनवाये गये।

एग्रो–इको सिस्टम कार्यक्रम

परियोजना का नाम	एग्रो–इको सिस्टम कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	बीकानेर, जोधपुर, नागौर, श्रीगंगानगर एवं जैसलमेर
वितीय सहयोग	सेल्को फाउन्डेशन-SELCO Foundation (35.00.000 Thirty File Lakh only)
स्हयोगी संस्थाएं	उरमूल सेतु ,उरमूल सीमान्त, ओरेकल,
परियोजना प्रारम्भ	सितम्बर 2019
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–सितम्बर 2021
परियोजना पूर्ण दिनांक	30 सितम्बर 2021

परियोजना परिचय : इस परियोजना का संचालन पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर एवं जैसलमेर जिले में सितम्बर 2019 से किया जा रहा है ताकि दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्र के जन समुदाय को एनर्जी इनोवेशन की आवश्यकता, महत्व एवं उपयोगिता के बारे में समझ विकसित करते हुएं इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित करते हुएं रोजगार के नये अवसरों की उपलब्धता को बढाया जा सके।

मुख्य उद्देश्य : थार रेगिस्तान के समुदाय के लिए रोजगार के नये अवसरों का विकास करना एवं मौजूदा मूल्य श्रृंखलाओं कशीदाकारी, कृषि, डेयरी एवं पशुपालन को नवाचार के माध्यम से मजबत करना।

परियोजना प्रगति विवरण–

हाईड्रोपोनिक्स :– जल संवर्धन या हाईड्रोपोनिक्स एक ऐसी तकनिकी है। जिसमें फसलों को बिना खेत में लगाए केवल पानी और पोषक तत्वों के माध्यमं से हाईड्रेपोनिक्स मशीन में उगाया जाता है। इसे जलीय कृषि भी कहते है, हाईड्रोपोनिक्स बिना मिट्टी के बागवानी करने की एक विधि है। यह मशीन सौर उर्जा से संचालित है। और एक मशिन में 28 ट्रे में बीज को अंकुरित करके ट्रे मे लगाया जाता है। पानी के फवारों के माध्यम से एक सप्ताह में बिना खाद–कीटनाशक से शुद्व पशुओं के हरा चारा विकसित कर पशुओं के खिलाने में काम आता है। और किसान–पशुपालक स्वय के पशुओं और स्वय का रोजगार कर सकता है। इसी के तहत 25 युवा पशुपालको को जोड़ा गया है।

क.स.	गतिविधि	संख्या	लाभार्थी
1.	कालू कलस्टर	09	09
2.	केला कलस्टर	05	05
3.	लूणकरणसर	08	08
	हाईट्रोपोनिक मशीन कुल	**22**	**22**

फोण्डर स्टेशन उरमूल कैम्पस बज्जू में स्थापित किया गया है। मुख्य कारण हरे चारा उत्पादन की आवश्यकता के लिए हाईड्रोपोनिक्स तकनीक की है। कारण जैसे :–

1. पशुपालको के पास कम स्त्रोत का होना।
2. हरा चारा उत्पादन के लिए उपजाऊ भूमि उपलब्ध न होना।
3. सिचाई,भूमि की तैयारी के लिए सिमित संसाधन होना।
4. खनन और तटीय क्षेत्रों में चारा उत्पादन के लिए सीमित भूमि।
5. आवारा और जंगली पशुओं के द्वारा चारा नष्ट कर देना।
6. कृषि कियाओं हेतु अधिक मजदूरों की आवश्यकता।
7. हरे चारे की मांग अधिक होना।
8. सिचाई चारे के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होना और समय पर पानी नही मिलना।
9. शुष्क समय में हरे चारे आ अभाव होना।
10. भूमिहीन पशुपालको के बहुत लाभदायक होना।

कोविड–19 राहत कार्यक्रम

परियोजना का नाम	कोविड–19 राहत कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	कोलायत ब्लॉक, जिला–बीकानेर एवं जायल ब्लॉक, जिला–नागौर
वितीय सहयोग	कैफ (CAF) Oracle (30.00.000 Thirty Lakh only)
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2016
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–सितम्बर 2021
परियोजना पूर्ण दिनांक	30 सितम्बर 2021

परियोजना परिचय : कोविड–19 वैश्विक महामारी के द्वौरान किसानों की आय में कमी आना और पशुपालको के उत्पाद जैसे दुग्ध दही, घी, आदि का उचित मूल्य नही मिलने से आर्थिक रूप से बहुत प्रभाव पड़ा जिससे बीज, खाद और पशुपालको के लिए पशुआहार, हरा चारा दुग्ध की गुणवता में कमी के लिए जॉच मशीन और स्टोक व सप्लाई की काफी समस्या का सामना के समाधान के लिए राहत कार्यक्रम चलाया गया।

मुख्य उद्देश्य :

- पशुपालको को पशुओं के लिए उच्च क्वालिटी का पशुआहर उपलब्ध करवाना ताकि अच्छी सहेत और पशुओं के स्वास्थ्य के लाभदायक हो।
- पशुपालको को दुग्ध की सप्लाई कें लिए उच्च क्वालिटी की केन उपलब्ध करवाना जिससे से ज्यादा समय तक दुग्ध रखा जा सके।
- हरे चारे की उपलब्धता निरन्तर मिलती रहे इसके लिए हाईड्रोपोनिक मशीन उपलब्ध करवाना।
- दुग्ध की क्वालिटी जॉच के लिए मिल्क टेस्ट मशीन उपलब्ध करवाना।

परियोजना प्रगति विवरण :

क.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम बैठक संख्या	सम्भागी विवरण		
			पुरूष	महिला	कुल
1.	मिल्क केन प्रशिक्षण एवं वितरण कार्याक्रम बज्जू	02	40	48	88
2.	मिल्क टेस्टीग प्रशिक्षण एवं वितरण कार्यक्रम पोकरण एवं बज्जू	02	03	01	04
3.	कैटल फिड (पशुआहार) प्रशिक्षण एवं वितरण कार्यक्रम बज्जू एवं लूणकरणसर	05	150	66	216
4.	हाईड्रोपोनिक मशीन बज्जू कलस्टर	03	18	04	22
	कुल	**12**	**211**	**119**	**330**

विशेष :– बीकानेर जिले के बज्जू, लूणकरणसर, जैसलमेर जिले के पोकरण के किसानो एवं पशुपालको का प्रशिक्षण कर उपरोक्त कोविड– 19 के तहत राहत सामग्री का वितरण किया गया।

1. गीता कम्पनी की स्टील केन उच्च क्वालिटी की केन पशुपालको को वितरण कि गई जिसमें गाय, भेस,भेड़ बकरी पालक के साथ साथ ऊट पालको को वितरण कि गई जिससे पशुपालक दुग्ध सप्लाई में उपयोग लेते है।
2. अवीवा कम्पनी की मिल्क टेस्टिग मशीन Ma-815 Milk Analyser ABS और Ultra Sonic Cleaner- Stearer- Vibrator प्रशिक्षण के बाद गाय दुग्ध संकलन केन्द्र पर 02 और कैमल मिल्क संकलन केन्द्र पर 02 मशीनो का वितरण किया गया था।
3. कैटल फिड (पशुआहार) में संस्था द्वारा कैन्टल यूनिट से तैयार निम्न सामग्री का उपयोग किया गया जिसमें मिनरल विटामिन, खल, मूँग चूरी, दलिया, गुड़ आदि का मिश्रण तैयार कर पशुपालको को वितरण किया गया।
4. हाईड्रोपोनिक्स का कलस्टर स्तर प्रशिक्षण के बाद युथ पशुपालको को बीज अकुरित से लेकर उत्पादन की प्रक्रिया सहित जानकारी देकर वितरण किया गया जिससे आय में बढ़ोतरी हो सके।

ऑक्सीजन कन्स्ट्रेटर वितरण कार्यक्रम

परियोजना का नाम	कोविड–19 ऑक्सीजन कन्स्ट्रेटर वितरण कार्यक्रम
परियोजना का कार्यक्षेत्र	कोलायत,लूणकरसर, खाजूवाला, श्रीडूँगरगढ़ ब्लॉक, जिला–बीकानेर एवं जायल ब्लॉक, जिला–नागौर
वितीय सहयोग	PSMRI & Barefoot College International (22.02.000 Twent two Lakh Two Thousant only)
परियोजना प्रारम्भ	अप्रेल 2021
प्रतिवेदन अवधि	अप्रेल 2021–सितम्बर 2021

परियोजना परिचय : कोविड–19 वैश्विक महामारी के द्वौरान प्रथम और दितीय बेव के द्वौरान विश्वभर में आक्सीजन की कमी के कारण बहुत बड़ा संकट जिला अस्पताल और सेटरलाईट हास्पीटल में आया काफी प्रयास सरकार स्तर से किये गये जो कि प्राप्त नही होने के कारण धीरे धीरे गॉवों में कोरोना बढता गया और ब्लॉक एवं ग्राम स्तर कोरोना की रोकथाम नही होने के कारण बहुत ज्यादा केस जिला स्तर आने लगे इनकी रोकथाम के लिए प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य स्तर पर ऑक्सीजन कन्स्ट्रेटर वितरण किया जाना तय किया गया।

मुख्य उद्देश्य :

- सब सेन्टर गाव स्तर पर प्रारम्भिक लक्षण मिलने वाले रोगीयो को तुरन्त स्वास्थ्य सेवा मिल सके।
- प्राथमिक स्वास्थ्य सेन्टर पर तुरन्त रोगी को आक्सीजन की व्यवस्था उलब्ध करवाना।
- सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर ही रोगी को आक्सीजन की व्यवस्था मिलने से जिला स्तर पर रेफर को रोकना।
- रोगी को तुरन्त आक्सीजन मिलने से खतरे से बचाने में बहुत मदद मिली।
- जिला स्तर पर कोविड के केसो को रोकने में कॉफी मदद मिली।
- ऑक्सीजन तुरन्त मिलने से काफी लोगो को कोरोना से बचाया जा सके।
- गाव एंव ब्लॉक स्तर पर काफी राहत मिली और अफरा–तफरी का माहौल्ल रोकने में काफी मददगार रही।
- गाव से जिला स्तर पर ऑक्सीजन से सुरक्षित रोगी को गम्भीर स्थिति में काफी मदद मिलने से लोगो का बचाया गया।

परियोजना प्रगति विवरण :

क.स.	गतिविधि का विवरण	केन्द्र संख्या	ऑक्सीजन कन्स्ट्रेटर संख्या
1.	सब सेन्टर स्वास्थ्य केन्द्र ग्राम एंव पंचायत स्तर वितरण	11	20
2.	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	12	25
3.	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	05	18
	कुल	**28**	**63**

विशेष :– कोरोना के प्रभाव कम होने के कारण वितरण नही किया गया है स्टॉक में वर्तमान में उरमूल कार्यलय स्टोर में रखे गये है। नॉडल एजेन्सी प्रथम के द्वारा माह मार्च 2022 में सभी को चालू स्थिति में अवलोकन करवाया गया।

एस.बी.आई. ग्राम सेवा परियोजना

परियोजना का नाम	एस.बी.आई ग्रांम सेवा परियोजना
परियोजना का कार्यक्षेत्र	ब्लॉक, जैसलमेर, जैसलमेर जिला
वितीय सहयोग	एसबीआई फाउण्डेशन–मुम्बई
परियोजना प्रारम्भ	जनवरी –2022
प्रतिवेदन अवधि	जनवरी–22 से मार्च 2022 तक

परियोजना परिचय : इस परियोजना का संचालन एस.बी.आई फाउण्डेशन.के सहयोग से जनवरी 2022 से जैसलमेर जिले के जैसलमेर उपखण्ड की 2 ग्राम पंचायतों के 5 गांव में किया जा रहा है।

मुख्य उद्देश्य : परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण विकास हैं। परियोजना के अन्तर्गत डिजिटलाइजेशन, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, स्वच्छता, आजीविका प्रबंधन,युवा विकास, महिलाओं का आमुखीकरण, पर्यावरण सरंक्षण, गांवों के आधारभूत ढांचें का विकास, सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार और ग्रामीणों का विभिन्न आमुखिकरण जैसे मुद्दों पर कार्य किया जा रहा हैं। परियोजना के अन्तर्गत एकीकृत ग्रामीण विकास किया जाना प्रस्तावित हैं। परियोजना के अन्तर्गत ग्रामों का गांधीजी के ग्राम स्वराज के सपने को साकार करना हैं।

परियोजना प्रगति विवरण :

डिजिटलाईजेशन : ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत परियोजना क्षेत्र के समस्त गांवों में ग्राम सेवा केन्द्रों का विकसित किया जाना प्रस्तावित हैं। जिसके माध्यम से ग्रामीणों का उनके डिजिटल कार्यो का समाधान ग्राम स्तर किया जा सके। जैसे राशन कार्ड बनाना, जनआधार कार्ड बनाना और अद्यतन करवाना, कृषि संबंधी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करना आदि। वर्तमान में परियोजना क्षेत्र में 3 ग्राम सेवा केन्द्रों का सफल संचालन किया जा रहा है साथ ही दो ग्राम सेवा केन्द्रों का विकास प्रस्तावित हैं। इन ग्राम सेवा केन्द्रों माध्यम से ग्रामीणों को ग्राम स्तर पर ही डिजिटल सेवाओं का उपयोग किया जा रहा हैं। इन केन्द्रों के माध्यम से प्रत्येक केन्द्र पर 1 युवा को रोजगार से जोडा गया है।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	ग्राम केन्द्रों का संचालन	लाभार्थी विवरण	
			आय का विवरण	कुल
1.	ग्राम सेवा केन्द्र	3	2160	155

शिक्षाः ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र में परियोजना के प्रत्येक गांव में रेमेडियल कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा हैं जिसके माध्यम से कक्षा 1 से 8 तक के छात्र और छात्राओं को निशुल्क शिक्षा प्रदान की जा रही हैं। साथ ही शिक्षा से वंचित बालक और बालिकाओं को विद्यालय से जोडने का प्रयास किया जा रहा हैं। ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं रहीं।

इसी तरह परियोजना के माध्यम से परियोजना क्षेत्र में गरीब बालिकाओं को स्कॉलरशिप प्रदान कर उन्हें अग्रिम शिक्षा हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। प्रत्येक बालिका को ₹ 5000/– की आर्थिक सहायता प्रदान की गई हैं।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	कार्यक्रम संख्या	लाभार्थीयों की संख्या
1.	रेमेडियल कक्षा	5	144
2.	एसबीआई ओजस स्कॉलरशिप	1	5

स्वास्थ्य : ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत स्वास्थ्य क्षेत्र में परियोजना क्षेत्र को एक मेडिकल वैन की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है। इस एम्बुलेंस के माध्यम से परियेाजना क्षेत्र के अतिरिक्त निकटतम गांवों में स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढीकरण हेतु प्रत्येक गांव में माह में 2 बार स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन करने का प्रयास किया जा रहा हैं। जिससे ग्रामीणों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो रहा हैं।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	लाभार्थी विवरण	
		संख्या	लाभार्थी
1.	एसबीआई संजीवनी एम्बूलेंस	1	5000
2.	स्वास्थ्य जांच शिविर	3	201

महिला सवर्धन :

ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत महिलाओं के सवर्धन हेतु नवाचार के प्रयास किऐ जा रहा हैं परियोजना क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक सवर्धन हेतु बकरी के दूध से साबुन बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को बकरी के दूध से साबुन बनाने के साथ उसके विपणन हेतु प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा हैं।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	प्रशिक्षणों की संख्या	सम्भागी विवरण	
			लाभार्थी	कुल
1.	साबुन निर्माण प्रशिक्षण	2	90	90

ग्राम विकास :

ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत ग्राम विकास के अन्तर्गत परियोजना क्षेत्र के सभी गांवों में परियोजना के जानकारी के बोर्ड को लगाकर परियोजना का प्रचार प्रसार किया गया।

क्र.स.	गतिविधि का विवरण	संख्या	लाभार्थी
1.	रोड साईड ब्राण्डिंग	5	5000

सामुदायिक संवर्धनः–

ग्राम सेवा परियोजना के अर्न्तगत सामुदायिक संवर्धन के विशेष महत्व को देखते हुए परियेाजना के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा हैं। जिससे समुदाय से जुडाव हो सके।

क्र.स.	गतिविधी	कार्यक्रम संख्या	लाभार्थी सदस्य
1.	अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस आयोजन	1	60
2.	विश्व जल दिवस	1	38

स्वयं सहायता समूहों का गठन : परियोजना के अन्तर्गत

ग्राम सेवा परियोजना के अन्तर्गत महिलाओं के आमुखिकरण हेतु महिलाओं के स्वयं सहायता समुहों का गठन किया गया है। परियोजना के अन्तर्गत इन समुहों के आमुखिकरण हेतु विभिन्न आजीविका संबंधित प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा हैं और भविष्य में किया जाएगा।

क्र.स.	गठित स्वयं सहायता समूह	सदस्य	बैठकों की संख्या
1	2	27	5